टीकम चन्द्र पहाड़ी
फोटोग्राफर - 1860 का सफर

Duration : 02.16 Transcribed words : 362

- संगीत -

00.11 टीकम चन्द्र पहाड़ी : देखिये, एक, दो, तीन... मेरा पूरा नाम है टीकम चन्द्र पहाड़ी.... मेरे दादा जी का भी नाम पहाड़ी लाल था... और फादर का नाम मोहन लाल...

00.25 टीकम चन्द्र पहाड़ी : सी ओल्ड कैमरा... टू मिनिट रेडी पिक्चर... ये कैमरा 1860 का कैमरा है... और इस प्रणाली को, इस युग में कोई नहीं कर रहा है...

00.32 टीकम चन्द्र पहाड़ी : हाँ मैडम देखिये कौन सा साईज बनवाना है.....

00.34 महिला : हाँ दिखाईये... क्या रेट्स हैं, बताईये...

00.36 टीकम चन्द्र पहाड़ी: मैं 1977 में फादर के पास जब आता था तो मैं भी बड़ा आश्चर्य चकित होता था कि पिंक सिटी कितना अच्छा लग रहा है... एक नई उमंग थी, नया बच्चा था एक तरीके से... पासपोर्ट साईज की फोटोग्राफी शुरू, चलती थी उस समय... लाईसेंस है, स्कूल की पासपोर्ट साईज की फोटो हैं, इनकम टैक्स की फोटो हैं... लोन पे, गाँव वाले जो लोन लेते हैं, वो फोटो पासपोर्ट साईज की खिंचाने आते थे... देखने को एक बात, दो तीन चीजें, एक आश्चर्यचकित हुई, कि एक्सीडेंट के फोटू भी खींचे जाते थे, जो कोर्ट में काम आते थे... तो इस कैमरे से वो फोटो भी खिंचती थी... पेपर पे ही नैगेटिव आता था और पेपर पे ही पॉजीटिव आता था... अच्छा, नैगेटिव टचिंग भी की जाती थी... अगर सपोज कीजिये किसी की मूँछ नहीं है, तो वो भी हम मूँछ बनाते थे, नैगेटिव पर... नैगेटिव पर ही मूँछे बनाई जाती थी... नैगेटिव पर ही बाल बनाये जाते थे, किसी के बाल नहीं होते थे तो उसको टच किया जाता था... और स्टाईल में फोटो, दिलीप कुमार स्टाईल... जैसे कि (दिलीप कुमार के विभिन्न स्टाईल करके दिखाते हुये) इस तरह की फोटुएँ हम लोग बनाया करते थे... इसलिये मैं इसको जिंदा रख रखा है मैंने कि हर आदमी आ के, इसकी पहचान को याद रखे, इसको भूले नहीं... और ये 1860 का कैमरा है... हाँ, इस पर कोई काम करने वाला अभी तो कोई मेरे को कोई नजर में आता नहीं है... और मेरा सौभाग्य होगा अगर कोई काम करने वाला होगा तो मैं उसको भी सलाम करूँगा...